P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-2) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

आतंकवाद वैश्विक समस्याः कारण एवं सुझाव

बनवारीलाल मैनावत
सह आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राज. महाविद्यालय,
गंगापुर सिटी, राजस्थान,
भारत

सारांश

21 वीं सदी में आर्थिक वैश्वीकरण की तरह आतंकवाद का भी वैश्वीकरण हो गया है। आतंकवादी संगठनों के अड्डे एक देश में नहीं, अनेक देशों में फैले हुए है। आतंकवादी गतिविधियों का संचालन दूर दराज देशों से भी किया जाता है। कई देश अन्य देशों में अस्थिरता, अशांति फैलाने के लिए इनका उपयोग करते है। भटकता युवावर्ग, असंतुष्ट युवा ब्रेनवॉश किये जाने पर धार्मिक उन्माद/ साम्प्रदायिकता व प्रलोभन में आकर इनसे जुड़ जाता है। देश, समाज, क्षेत्र में तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर यह बढ़ता ही जा रहा है। जिससे विकास का मार्ग बाधित हो गया है। अनेक जघन्य घटनाऐं विश्व को हिला देती है। इस घातक मानवता व समाज विरोधी बीमारी को रोकने के लिए सभी देशों को एकजुट होकर प्रयास करना पड़ेगा। आतंकियों का सहयोग करने वाले देशों को प्रतिबंधित करना होगा तथा युवा वर्ग की ऊर्जा का सकारात्मक उपयोग करने की जरूरत है। विश्व स्तर पर चर्चा की जाए तथा निगरानी संगठन विकसित किया जाए। आतंकवादी अड्डों की पहचान की जाए तथा उनके सहयोगी/ जनक देशों की पहचान की जानी चाहिए, जिससे घटनाओं पर रोक लग सके।

मुख्य शब्द : आतंकवाद, आर्थिक–सामाजिक विकास, अस्त्र–शस्त्र, विस्फोट, आतंकी अड्डे, ब्रेनवॉश, धार्मिक उन्माद, वैश्वीकरण, विश्व संस्था, नैतिक मूल्य, मानवता, अस्थिरता, दिशाहीन युवावर्ग, अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन, जघन्य घटनाऐं, हिंसा, हत्या, अपहरण, असंतोष।

प्रस्तावना

वर्तमान समय में जहाँ विज्ञान, प्रोद्योगिकी, मानव अधिकार तथा मानव सुविधाओं के संसाधनों का विकास हो रहा है, वही सम्पूर्ण विश्व आतंकवाद की चपेट में आ रहा है। आये दिन आतंकी घटनाओं, हिंसा, हत्या, अपहरण आदि क्रूर घटनाओं के समाचार सुनने को मिलते है। विश्व विकास की ओर बढ़ रहा है, किन्तु सभ्य समाज, शांति व समरसता, प्रेम के आदर्श मूल्य कहीं पीछे छूटते जा रहे है। निर्दोष भीड़ पर बम विस्फोट, हिंसक घटना, मानव बम का प्रयोग, शस्त्रों की होड़, संचार क्रांति की तकनीक का दुरूपयोग आदि गतिविधियाँ समाज को विकृति की ओर ले जा रही है।

अध्ययन का उद्देश्य

वैश्वीकृत आतंकवादी समस्या को रोकने की जिम्मेदारी सभी देश समझे, उचित मार्ग निकाले। आतंकवाद आर्थिक एवं वैज्ञानिक, सामाजिक विकास के लिए घातक है। सभी प्रभावित है। इसका एकजुट होकर मुकाबला करते हुए समाधान किया जा सकता है। यह किसी देश विशेष की समस्या नहीं है, सबकी समस्या है। मानव जाति की समस्या है।

विषय विस्तार

आतंकवाद एक ऐसी विचारधारा है जो अपनी स्वार्थ सिद्धि और राजनीतिक उद्देश्य प्राप्ति के लिए हर प्रकार की शक्ति तथा अस्त्र–शस्त्रों के प्रयोग करने में विश्वास रखती है। अस्त्र–शस्त्रों का ऐसा घृणित प्रयोग प्रायः विरोधी वर्ग, समुदाय, सम्प्रदाय अथवा राष्ट्र विशेष को गैर–कानूनी ढंग से डराने, धमकाने, जान से मारने, हिंसा के माध्यम से सरकार गिराने तथा शासन–तंत्रों पर अपना प्रभुत्व जमाने के उद्देश्य से किया जाता है। इस प्रकार आतंकवाद उस प्रवृत्ति को कहा जा सकता है, जिसके माध्यम से कतिपय अवांछित तत्व अपनी सभी प्रकार की माँगें मनवाने के लिए अनेकानेक प्रकार के घोर हिंसात्मक उपायों एवं जघन्य अमानवीय साधनों एवं अस्त्र–शस्त्रों का प्रयोग करते है। विश्व का कोई भी कोना ऐसा नहीं, जहाँ किसी न किसी रूप में, किसी न किसी सिद्धान्त के अन्तर्गत ये गतिविधियाँ न चल रही हो। विकसित एवं विकासशील

दोनों ही प्रकार के देशों को आतंकवाद का जहर पीना पड़ रहा है। आतंकवादी प्रवृत्तियों का प्रयोग केवल सत्ता से बाहर रहने वाले व्यक्तियों/समूहों द्वारा ही नहीं किया जाता है, बल्कि कभी–कभी सत्ताधारियों द्वारा भी अपने सर्वाधिकार को बनाए रखने के लिए इन प्रवृत्तियों का प्रयोग किया जाता है। हिटलर, मुसीलिनी, स्टालिन, रूसी जारों द्वारा जिस प्रकार आतंकवाद का प्रयोग किया गया, उससे लगता है कि आधुनिक युग में आतंकवाद सार्वजनिक उद्योग बन गया है। आतंकवाद बदले की भावना से भी किया जाता है। अपने लक्ष्य को पाने के लिए दबाब व भय का वातावरण बनाकर अपनी बात मनवाई जा सकती है। इसके लिए निर्दोष व्यक्तियों, सार्वजनिक स्थल, बस, ट्रैन, विमानों को निशाना बनाया जाता है। इस प्रकार हिंसा के व्यवस्थित प्रयोग द्वारा एक संगठित समूह या दल द्वारा अपने लक्ष्यों की प्राप्ति ही आतंकवाद है। आतंकवाद एक बर्बर कार्यवाही है। आतंकवाद का समर्थन करने वाले लोग वहशी लोग होते है।

आतंकवाद की प्रमुख गतिविधियाँ

1. आतंकी कार्यवाहियों में सार्वजनिक सम्पत्ति एवं सुविधाओं को नष्ट करके अपनी माँग मँगवाने का दबाब बनाना, अति महत्वपूर्ण नेताओं/ व्यक्तियों की हत्या, अपहरण, आतंकियों की रिहाई का दबाब डालना, बम–विस्फोट तथा तोड़–फोड़ किया जाना।
2. भय का वातावरण, सुख–शांति का क्षरण, आर्थिक हानि पहुँचाना, राजनीतिक अस्थिरता पैदा करना।
3. धर्म–जाति के आधार पर वैमनस्य फैलाना।
4. हिंसात्मक बर्बर कार्यवाहियाँ एवं अनेक निर्दोष व्यक्तियों को निशाना बनाना व अनुचित मांगे मनमाने का दबाब बनाना।
5. आतंकवाद फैलाने के लिए संचार–साधनों एवं नई तकनीकों का दुरूपयोग भी किया जाता है।
6. आतंकी संगठन निर्मित होते है, नवयुवकों को जेहाद व जाति के नाम पर जोड़ा जाता है। प्रशिक्षण दिया जाता है, उनका ब्रेनवॉश करते हुए राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंसात्मक/हत्या/बम–विस्फोट को बढ़ावा दिया जाता है, आदि।

वर्तमान समय में विश्व में आतंकवादी गतिविधियाँ निरन्तर बढ़ रही है। राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक आतंकी संगठन विकसित हो रहे है। कम या ज्यादा मात्रा में अधिकतर देशों में आतंकी संगठन बने हुए है।

उदाहरण के लिए

संघीय जर्मन गणराज्य में– मेनहौफ
फ्रांस – ब्रेतने, पोरल लिबरेशन
आयरलैण्ड – आयरिश रिपब्लिक आर्मी
टर्की – टर्की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी
इजराइल –हमास, अलकायदा
अर्जेंटिना – ERP (यूर्सितो रिवोल्यूशनरीदोल प्यूब्लो)
बोलिविया– ELN (यूसितोद लिबरेशियान नेशनल)
उत्तरी अमेरिका– ब्लैक पैंथर, अलकायदा
इथोपिया – ELF (इरिट्रीयन लिबरेशन फ्रंट)
जापन – रेंगो सेंकिगुन
फिलिस्तिन – PLO (पैलेस्टाइन लिबरेशन और्गेनाइजेशन)
श्रीलंका – LTTE (लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल ईलम)
पाकिस्तान– आई एस आई लस्कर–ए–तयबा, अलकायदा
भारत एवं – ISI, सिमी, जैस–ए–मोहम्मद, अलकायदा
बांग्लादेश – नक्सलवाद, जे के एल एफ, हिजबुल मुजाहिद्दीन मुस्लिम जाँबाज फोर्स, हिजबुल्लाह, अल उमर मुजाहिद्दीन, वीर खालसा, बब्बर खालसा, उल्फा, नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रन्ट ऑफ बोडोलैण्ड, पीपुल्स लिबरेशन आर्मी, पीपुल्स रिवॉल्यूशनरी पार्टी ऑफ कॉग्लीपाक, कॉग्लीपाक कम्यूनिस्ट पार्टी, ऑल त्रिपुरा टाइगर फॉर्स, नेशनल लिबरेशन फ्रंट ऑफ त्रिपुरा, हन्नीवट्रेप नेशनल कॉउन्सिल, जैली रिवॉल्यूशनरी आर्मी, कूकी नेशनल आर्मी अफगानिस्तान– तालिबान, लश्कर–ए–तैयबा इनके तार एक देश तक सीमित नहीं रहते, बल्कि पड़ौसी एवं दूर–दराज के देशों से भी जुड़े रहते है। अपने अड्डे अन्य देशों में भी बना लेते है।

भारत में आतंक फैलाने वाले उग्रवादी संगठनों ने पड़ौसी देशों यथा–पाकिस्तान, अफगानिस्तान, पाक–अधिकृत–कश्मीर, बांगलादेश, भूटान तथा श्रीलंका आदि देशों में आतंकी अड्डे बना रखे है। वही से अपनी गतिविधियों को संचालित करते रहते है और पाक जैसा देश खुलेआम आश्रय देता है व प्रशिक्षण केन्द्रों में आतंकवादी तैयार किए जाते है। भारत लम्बे समय से आतंकवादी गतिविधियों की चपेट में रहा है और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इसे विश्व समस्या बनाने व सामूहिक निराकरण की गुहार लगाता रहा है। भारत के प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी, राजीव गाँधी तथा अनेक बड़े नेताओं की हत्या व जन–धन की हानि झेलता रहा है। 2001 मे संसद पर हमला, मुम्बई में ताज होटल में बम–विस्फोट, जयपुर सीरियल बम ब्लास्ट, हैदराबाद में बम ब्लास्ट जैसी नृशंस हत्याओं व घटनाओं का सामना किया है। 2001 में अमेरिका के न्यूयार्क शहर में वर्ल्ड ट्रेड–सेन्टर और वॉशिंगटन पर आतंकी हमलों के बाद आतंकवाद विश्व समस्या बन गया है। वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर के हमले के बाद ओसामा–बिन–लादेन ने कहा कि जितना अनुमान लगाया, उससे अधिक हानि पहुँचाने में कामयाब हुए। आतंकवाद के खातमे के लिए विश्व स्तर पर भी अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रांस, रूस, कनाडा आदि देश प्रयास करने लगे है। किन्तु पाकिस्तान एवं चीन जैसे देश जो जन्मदाता है, आतंकवाद को संरक्षण देते है व अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए प्रोत्साहन देते है, जिससे कि भारत जैसा विकासशील देश विकास की राह पर न चल सके। अशांति बनाए रखने का इन देशों का यही उद्देश्य रहा है। नबम्वर 2018 का चीनी दूतावास पर आतंकी हमला यह दर्शाता है कि चीन कितनी ही आर्थिक मदद व योजना बना ले, आतंकियों का विश्वास नहीं जीता जा सकता। वे किसी के वफादार नहीं होते है। पाक स्वयं भी ऐसी गतिविधियों का शिकार हो रहा है, जबकि वह तो इसका जन्मदाता है।

2018 में चीन में हुए ब्रिक्स के सम्मेलन में भारत के जोर देने पर आतंकवाद उन्मूलन पर चीन ने समर्थन तो कर दिया था, लेकिन पूर्ण निष्ठा व नैतिकता के साथ आत्मसात नहीं किया है। विश्व स्तर पर हो रही आतंकवादी घटनाओं के विरुद्ध चीन व पाक ने कभी भी ठोस समर्थन नहीं दिया। चीन ने सुरक्षा–परिषद् में भी इस

संबंध में कभी भी आवाज नहीं उठाई है। वर्तमान में चीन व पाक स्वयं दुष्परिणाम भुगतने लगे है। पाक मे आए दिन बम–विस्फोट, बेनजीर भुट्टो की हत्या आदि तथा जब अमेरिका पाक पर आतंकवाद रोकने के लिए आर्थिक सहायता रोक देता है तो चीन व्यापारिक योजनाओं के नाम पर पाकिस्तान का सहयोग करने लगता है। किन्तु आतंकवादी किसी के प्रति दयालु नहीं होते। नबम्वर 2018 में चीनी दूतावास करांची में आतंकी हमलाा इसी की चुनौती थी। इसलिए चीन को आतंकवाद पर विचार करना चाहिए, जो कि आतंकवाद के जनक पाक को सहयोग करता है। चीन द्वारा चीन–पाक के बीच आर्थिक गलियारे की व्यापारिक योजना पर धन निवेश किया जा रहा है, किन्तु भारत–पाक–अफगानिस्तान व अन्य देशों में जो आतंकवाद बढ़ रहा है, उसके उन्मूलन की ओर कोई ध्यान नहीं है। कुल मिलाकर पाक सेना व आतंकवादियों को आर्थिक सहयोग कर के भारत में अशांति व अस्थिरता फैलाने के उद्देश्य को पूरा करना चाहता है। आज वैश्विक स्तर पर आतंकवाद के विरुद्ध घेराबंदी हो रही है। भारत के प्रयासों से संयुक्त राष्ट्र की आतंकवाद विरोधी नीतियों/प्रस्तावों में चीन भी राजनयिक स्तर पर आतंकवाद उन्मूलन हेतु कार्य करने के लिए विवश हुआ है, लेकिन चीन ने अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया है, न ही ठोस नीति बनाई है।

अमेरिका भुगतभोगी है। ओसामा–बिन–लादेन को पनपाया व पाक को निरंतर सहयोग देने के बावजूद उसी के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर को ढहा दिया। पेन्टागन पर हमला किया गया। पाक की आर्थिक मदद रोक देने के बावजूद पाक में आतंकी गतिविधि नियंत्रित नहीं हो रही है। मास्को में रूस के विदेशमंत्री द्वारा तालीबानी नेताओं के साथ अक्टूबर 2018 में वार्ता की गई। जिसमें भारत, पाक, चीन, ईरान, अफगानिस्तान के नेता उपस्थित थे, उसी समय अफगानिस्तान के सुरक्षित स्थानों पर तालीबान ने बम–विस्फोट किए और काफी संख्या में देशी–विदेशी नागरिक मारे गए। ये घटनाऐं आतंकियों के बुलंद हौंसले दर्शाती है। जब तक सम्पूर्ण विश्व एकजुट होकर उन्मूलन के लिए कदम नहीं बढ़ायेगा, यह घटनाऐं निरन्तर चलती रहेगी।

21 वीं शताब्दी में न केवल आर्थिक क्षेत्र में ही वैश्वीकरण को जन्म दिया है, बल्कि आतंकवाद का भी वैश्वीकरण हो गया है। आज विश्व का प्रत्येक राष्ट्र आतंकवाद की आशंका से त्रस्त है। मार्च 2004 में स्पेन की राजधानी मैड्रिड में एक साथ चार ट्रेनों में 10 बमों का विस्फोट हुआ। इसी वर्ष सितम्बर को चेचेन के वेसलेन नगर में एक स्कूल में दो दिनों तक आतंकवादियों का कब्जा रहा तथा 172 स्कूली बच्चों की मौत हो गई। फरवरी 2005 में हिल्ला में आत्मघाती हमले में 100 से अधिक मौतें हुई। सन् 2005 में कश्मीर में आतंकियों ने अनेक आतंकी कार्यवाही की। जुलाई 2005 में अयोध्या को भी निशाना बनाया गया। इसी प्रकार जुलाई 2005 को लंदन की भूमिगत ट्रेनों में आतंकवादियों ने विस्फोट किए, जिसमें 52 व्यक्ति मारे गए। भारत में वर्ष 2008 के दौरान भारत के विभिन्न शहरों में सीरियल–ब्लास्ट घटनाऐं हुई, जिनमें 450 से अधिक लोग मारे गए। जयपुर, दिल्ली, बैंगलोर, मुम्बई, अहमदाबाद, गुवाहाटी आदि शहर इसके शिकार हुए। 2010 में भारत में नक्सली हमलों में 288 से अधिक लोग मारे गए। कुछ समय पूर्व श्रीलंका के बम–विस्फोटों ने सबको हिला दिया। पठानकोट आतंकी हमला, 2019 में पुलवामा में बम–विस्फोट घटना में 42 सैनिक शहीद हुए। इसके अतिरिक्त भारत का पड़ौसी देश पाकिस्तान भी आतंकवाद की समस्या से जूझ रहा है। पिछले कुछ वर्षो में पाकिस्तान के बड़े शहरों इस्लामाबाद, कराची, रावलपिण्डी आदि में लगातार आतंकवादी हमले हुए है। विश्व में आतंकवादी घटनाओं का सिलसिला आज भी जारी है।

जब तक सम्पूर्ण विश्व एकजुट होकर इसके उन्मूलन के लिए प्रभावी कदम नहीं उठायेगा, यह घटनाऐं निरंतर चलती रहेगी। 13 जून 2019 को किर्गिस्तान के विश्केक में संघाई सहयोग संगठन (एस सी ओ) शिखर सम्मेलन में चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग से मुलाकात के समय भारतीय प्रधानमंत्री ने स्पष्ट कहा कि पाकिस्तान से संबंध तभी सुधरेंगे जब पाक आतंकवाद उन्मूलन के लिए ठोस कदम उठाए। इसमें अन्य देश भी सहयोग करें। संघाई शिखर सम्मेलन में बोलते हुए पी एम मोदी ने जोर देकर कहा कि आतंकवाद को सहयोग करने वाले देशों की पहचान की जाए तथा सभी देश एकजुट होकर कार्य करे। आतंकवाद को पनाह देने वाले देशों को जिम्मेदार ठहराया जाए। आर्थिक विकास तभी होगा जब आतंकवाद पर प्रतिबंध लगाया जाए। पी.एम. मोदी ने कहा कि आतंकवाद पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन किए जाने की मेजबानी करने को भारत तैयार है।

आतंकवाद के प्रमुख कारण

जब समाज में असंतोष बढ़ता है जिसका मुख्य कारण अन्याय–शोषण होता है। विश्व के विभिन्न देशों के समाज में व्याप्त असंतोष, अन्याय एवं शोषण के अंश आज भी विद्यमान है, जो अन्ततः विद्रोह, हिंसा के रूप में फूटता है। वर्तमान में युवकों में असंतोष है, वे दिशाहीन होकर गलत मार्ग की राह पकड़ लेते है। बेरोजगारी इसका मुख्य कारण बनता है। भटके हुए युवाओं का ब्रेनवॉश करके धार्मिक उन्माद से जोड़ दिया जाता है। अनेक प्रकार के प्रलोभन देकर उन्हें आतंकी संगठनों से जोड़ लिया जाता है। आतंकवादी संगठनों के अड्डे विभिन्न देशों में होते है। एक देश दूसरे देश में आतंकी गतिविधियों को सहयोग करता है, जैसे– पाक आतंकी संगठनों को सहयोग करके भारत में अशांति व अस्थिरता पैदा करना चाहता है। अवैध अस्त्र–शस्त्रों का व्यापार आतंकियों की शक्ति को बढ़ा देता है। आधुनिक संचार क्रांति के संसाधनों द्वारा एक देश से दूसरे देष में आतंकी संगठनों/अड्डों का संचालन किया जा सकता है। राजनीतिक दल भी सत्ता में आने के लिए सभी प्रकार के हथकंडे अपनाते है। जिससे हिंसक ग्रुप का विकास होता है, जो कि बाद में अनियंत्रित होकर आतंकवादी संगठन का रूप ले लेता है। सामाजिक अन्याय एवं वर्तमान पीढ़ी में नैतिक मूल्यों की गिरावट ने मर्यादाओं को तोड़ दिया है। जिससे व्यक्ति पर से सामाजिक बंधन हटने लगे है। सरकारें किसी भी समस्या का समय रहते प्रभावी कदम नहीं उठाती है, बाद में वही विकराल रूप धारण करके

आतंकवाद बन जाता है। विरोधी देशों की कूटनीतिक चालों द्वारा भी अशांति का वातावरण बनाया जाता है। धार्मिक, जातिगत, वर्गगत कट्टरपन जब बढ़ता है तो समाज में वैमनस्य का जहर फैलता है जो अततः हिंसा, दंगें एवं टकराव व वर्चस्व की लड़ाई में परिवर्तित हो जाता है। समूहों, दलों, सरकारों, देशों द्वारा कूटनीतिक चालों के लिए हिंसक व उग्रवादी तत्वों का सहारा लिया जाता है। गरीबी, बेरोजगारी तथा युवावर्ग की हताशा उन्हें अपराधीकरण की ओर मोड़ देती है।

आतंकवाद उन्मूलन के प्रयास

विश्व स्तर पर अनेक प्रकार से प्रयास किए गए है। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने आतंकवाद से निपटने के लिए सितम्बर 2001 में 1373 वाँ प्रस्ताव पास किया तथा सुरक्षा–परिषद् ने भी इसे स्वीकृत कर दिया। इसमें आतंकवादी गतिविधियों के लिए वित्तीय सहायता पर प्रतिबंध लगाया गया था। अमेरिका ने भी आतंकवाद विरोधी विश्व जनमत हासिल करने का अभियान चलाया, नाटो के सदस्यों व रूस तथा अन्य देशों का समर्थन मिला। पाकिस्तान की भूमि का उपयोग करके अफगानिस्तान की तालीबान सरकार का पतन किया तथा बाद में ओसामा–बिन–लादेन का खात्मा किया। आतंकवाद को इस्लाम से अलग करने का प्रयास किया है और यह जताया कि यह विश्व अशांति/हिंसा का संगठन है। हालांकि अमेरिका ने आतंकवाद विरोधी नीति अपने राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा तक सीमित रखी है। अन्य देशों में ऐसी गतिविधि का पुरजोर विरोध नहीं किया। इजराइल, भारत एवं अन्य देशों की आतंकी गतिविधियों के प्रति भिन्न दृष्टिकोण रहा है। भारत ने हमेशा किसी भी आतंकवादी गतिविधि का विरोध किया है। विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों जैसे संयुक्त राष्ट्र संघ, जी–77 के शिखर सम्मेलन, जी–15 के सम्मेलन, ब्रिट्रेन के साथ घोषणा (2002), रूस के साथ घोषणा पत्र (2002), संयुक्त राष्ट्र के 62 वें अधिवेशन (2007), दक्षेस सम्मेलन, संघाई देशों (एस.सी.ओ.) सम्मेलन 2019 में चीनी राष्ट्रपति से वार्ता आदि में हमेशा आतंकवाद को रोकने के लिए पुरजोर आवाज उठाई है। भारत ने स्पष्ट कर दिया कि पाक से संबंध सुधार तभी हो सकते है जब वह आतंकवाद विरोधी ठोस कदम उठायें। वह अन्य किसी भी आतंकवाद सहयोगी देश का सहयोग नहीं करेगा।

संयुक्त राष्ट्र के अधीन अन्य प्रयासः–

काउन्टर टेरिरिज्म कमेठी (सीटीसी)

यह UNO द्वारा आतंकवाद विरोधी प्रस्तावों का क्रियान्वयन करती है व प्रभावित देशों का सहयोग करती है।

फाइनेंसियल एक्सन टास्क फोर्स

यह आतंकवादियों के वित्तीय स्त्रोतों पर निगरानी रखती है।

ऑपरेशन ग्रीन क्वेस्ट

न्यूयार्क स्थित यह संगठन आतंकवादियों के वित्तीय स्त्रोतों की रोकथाम का कार्य करता है।

काउन्टर टेररिज्म ग्रुप (सी.टी.ए.जी.)

यह आतंकियो के वित्तीय स्त्रोतों पर निगाह रखता है।

सुझाव

वर्तमान में आतंकवाद का वैश्वीकरण हो गया है। आतंकवादी संगठनों के तार विश्व के अनेक देशों में ऐसे ही संगठनों से जुड़े रहते है। इनकी गतिविधि किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं होती है बल्कि अनेक देशों तक पैर पसरे रहते है।

1. संघाई सहयोग संगठन के सम्मेलन में 13,14 जून 2019 को भारतीय प्रधानमंत्री मोदी ने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि सभी देश इस समस्या से ग्रसित है और इसका निराकरण सभी देश एकजुट होकर निकाल सकते है। आतंकवादियों को दी जाने वाली वित्तीय सहायता पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाए तथा जिन देशों द्वारा सहयोग किया जाता है या जिन देशों में आतंकियों के अड्डे है, उनकी पहचान करके उन्हें जिम्मेदार ठहराया जाए। समय–समय पर आतंकवाद निराकरण के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाए जाए और प्रभावी कदम उठाने की योजना बनाई जाए। सभी देश ईमानदारी से इसमें सहयोग करे तो इसके निराकरण का रास्ता निकलेगा। आज विश्व के अधिकतर देशों का आर्थिक विकास तथा वैज्ञानिक विकास आतंकवाद के कारण बाधित हो रहा है।
2. अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तथा राष्ट्रीय स्तर पर आतंकवादी गतिविधियों तथा उनके अड्डों पर नजर रखने तथा कानून बनाने व समय–समय पर सम्मेलन करने की एक संस्था/संगठन का निर्माण किया जाए, जो इस पर नजर रखे, निराकरण की योजना बनाए तथा इनके वित्तीय स्रोतों को प्रतिबंधित करने की कार्यवाही करें। समयानुसार उचित सुझाव दे तथा आतंकवाद का सहयोग करने वाले देशों की पहचान करे। किसी समस्या के विकराल रूप लेने से पहले कोई रास्ता निकाले। आतंकवाद का सहयोग करने वाले देशों पर आर्थिक, राजनीतिक प्रतिबंध लगाए जाए।
3. आतंकवादी संगठन, उनके अड्डे, वित्तीय स्त्रोत, सहयोगी देशों की पहचान करने वाली अन्तर्राष्ट्रीय संस्था बनाई जाए।
4. वर्तमान में युवावर्ग में बेरोजगारी, गरीबी, अन्याय, शोषण आदि के कारण असंतोष बढ़ रहा है और भटकते हुए युवा आतंकी संगठनों से जुड़ जाते है। प्रत्येक देश की सरकार युवाओं की ऊर्जा का सकारात्मक उपयोग करे। उन्हें रोजगार देकर विकास की मुख्य धारा से जोड़े।
5. आर्थिक एवं सामाजिक अन्याय, शोषण का निराकरण करें तथा शिक्षा का प्रचार–प्रसार करके मानवीय मूल्यों को बढ़ावा दें। सामाजिक समझ तथा समरसता पर जोर दिया जाए एवं समाज में एक अच्छा वातावरण बनाने का प्रयास किए जाए।
6. पुलिस एवं सुरक्षा विभाग को आतंकी गतिविधियों को रोकने के लिए कठोर व उचित कानून व शक्तियाँ दी जाए। सुरक्षा विभाग का आधुनिककरण किया जाए।
7. समाज में उठने वाली समस्याओं, असंतोष पर सही समय पर गौर करके उचित समाधान के कदम उठाए

जाए। जैसे पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गाँधी द्वारा पंजाब समस्या, असम समस्या, गौरखालैण्ड समस्या, मिजोरम समस्या, तमिल समस्या आदि के संबंध में प्रभावी कदम तथा उचित समाधान का प्रयास किया गया था।

8. राजनीतिक दलों एवं दबाब समूहों की राष्ट्र विरोधी स्वार्थ–परिता वाली गतिविधियों को प्रतिबंधित करने के नियम बनाए जाए।
9. राष्ट्रीय चरित्र निर्माण पर बल दिया जाए तथा संकुचित साम्प्रदायिक गतिविधियों को हतोत्साहित किया जाए।
10. धार्मिक, जातिगत, वर्गगत, क्षेत्रीयता वाले कट्टरपन को प्रतिबंधित किया जाए। राष्ट्रहित, समाज हित एवं मानव हित को सर्वोपरिता दी जाए। उचित वातावरण विकसित करे।
11. अवैध शस्त्रीकरण, अस्त्र–शस्त्र व्यापार को रोका जाए। इसके लिए शख्त नियम बनाए जाए।

विश्व–शांति एवं सह–अस्तित्व से बड़ा कोई मानवीय मूल्य नहीं है। इसको प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इसमें सभी देषों का सहयोग आवष्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

चतुर्वेदी, गीता, भारतीय राजव्यवस्था, पंशशील प्रकाशन, जयपुर

सिंघल, एस.सी, अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा

जैन, पुखराज, भारतीय राज–व्यवस्था, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा

खण्डेला, मानचंद, भारतीय राजनीति का भविष्य, अरिहंत पब्लिसिंग हाउस, जयपुर

खण्डेला, मानचंद, भारतीय राजनीति का बदलता परिदृश्य, अरिहंत पब्लिसिंग हाउस, जयपुर

फडिया, बी.एल., अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, साहित्य भवन प्रकाशन, आगरा

फडिया, बी.एल., अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, साहित्य भवन प्रकाशन, आगरा

बडोला, विवेक कुमार, आतंकवाद पर विचार, दैनिक नवज्योति, 23 नबम्वर 2018

दैनिक भास्कर, दिनाँक 14, 15 जून 2019

विभिन्न पत्र–पत्रिकाएँ

इन्टरनेट